IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विकसित भारत हेतु नैतिक मूल्यों की शिक्षा

[1]सत्येन्द्र कुमार एवं [2]प्रो० (डॉ०) राजीव कुमार

[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2]प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

शोध सारांश :– आज के समय में शिक्षा का उद्देश्य मात्र जीविकोपार्जन, अच्छी नौकरी पाने तक सिमट कर रह गया है। इसके दुष्परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में निहित नैतिक मूल्यों का पतन की ओर अग्रसर होना है। आज समाज का प्रत्येक विद्यार्थी अपने नैतिक मूल्यों के प्रति उदासीन हो चला है, जिसके कारण समाज में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, लूटपाट, बलात्कार, हत्या, झूठ, बेईमानी आदि अनेक समस्यायें उत्पन्न होने लगी है। इन समस्याओं का मूल कारण नैतिक मूल्यों की शिक्षा का अभाव होना है। हमारी प्राचीन शिक्षा नैतिक मूल्यों पर जोर देती है। हमारी प्राचीन शिक्षा नैतिक मूल्यों पर जोर देती है। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के चरित्र का निर्माण किया जाता था।

वर्तमान में जहाँ हम विकसित भारत बनाने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि आज की शिक्षा प्रणाली में भी नैतिक मूल्यों की शिक्षा देकर हम अपने विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण कर सकते हैं। नैतिक शिक्षा छात्रों को सही और गलत में अंतर करना सिखाती है, जिससे वे अच्छे नागरिक बन सकें और समाज को बेहतर बनाने में योगदान दे सकें। नैतिक मूल्यों का विकास बच्चे, वयस्क विद्यार्थियों को सिखलाया जा सकता है।

आज समय की यह मांग है कि पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा का समावेश किया जाए, साथ ही नीति ग्रंथों, वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पंचतंत्र, हितोपदेश, महान व्यक्तियों की जीवनी तथा सनातन परंपराओं की शिक्षा को शामिल कर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उनके चरित्र का निर्माण भी किया जा सकता है। एक विकसित भारत के निर्माण हेतु हमारे देश के युवा खासकर विद्यार्थियों (छात्रों) में दया, सहिष्णुता, क्षमा, सत्य, न्याय, सेवा, सदाचार, इन्द्रिय संयम, कर्त्तव्य–पालन, निष्ठा आदि गुणों को जीवन में धारण करके ही एक आदर्श विद्यार्थी अपने समाज को आदर्श समाज बना सकता है। जिससे विकसित भारत का सपना सकार हो पायेगा।

निष्कर्ष :– नैतिक मूल्यों की शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो छात्रों को एक बेहतर इंसान और एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करती है। शिक्षण संस्थानों, परिवारों और समुदायों को मिलकर नैतिक मूल्यों की शिखा को बढ़ावा देना चाहिए जिससे एक विकसित और समृद्ध भारत का निर्माण हो सके।

मूल शब्द :– नैतिक मूल्य, सर्वांगीण विकास, इन्द्रिय संयम, निष्ठा, सदाचार, सहिष्णुता, परोपकार।

1. नैतिक मूल्यों का अर्थ एवं स्वरूप

किसी भी सभ्य समाज में कुछ नियम होते हैं जो व्यक्ति और समाज दोनों द्वारा मान्य होते हैं, तथा व्यक्ति और समाज को उन्नति की ओर ले जाते हैं, नैतिक मूल्य कहलाते हैं।

शिक्षा में नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व है। शिक्षा जीवन का भाग है, नैतिक मूल्य समाज का वह तत्व है, जिसकी उपस्थिति में सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। नैतिकता समाज की वह अमूल्य वस्तु है, जो सदगुणों को प्रदर्शित करती है। उचित–अनुचित के विचार की संकल्पना को नैतिकता कहा जा सकता है। नैतिक मूल्य वह है, जो विद्यार्थी को कौन से कार्य करने चाहिए या न करने चाहिए इसकी आज्ञा देता है, नैतिक मूल्यों में यह भाव भी समाहित है कि अमुक कार्य अनुचित है। अतः उसे नहीं करना चाहिए। नैतिक मूल्यों का आधार पवित्रता, न्याय, सत्य, अहिंसा, आज्ञाकारिता, दयालुता एवं कर्त्तव्यपरायणता है।

नैतिक मूल्यों को समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है। अतः इसका पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी तथा मानव का पावन कर्त्तव्य बन जाता है।

मेकाईवर एवं पेज के अनुसार, ''नैतिकता का तात्पर्य नियमों की उस व्यवस्था से है, जिसके द्वारा व्यक्ति का अन्तःकरण अच्छे और बुरे का बोध प्राप्त कराता है।''

डॉ० कोपर के अनुसार, ''नैतिक मूल्यों के साथ व्यवहार के कुछ नियम जुड़े हैं, जैसे– चोरी न करना, किसी को हानि न पहुँचाना आदि। इसके अतिरिक्त बड़ों का आदर करना, सत्य का पालन करना, दुर्बलों को तंग न करना, सबकी सहायता करना आदि।''

प्रस्तुत विचारकों के वक्तव्य के अनुसार नैतिक मूल्य एवं नैतिक शिक्षा जीवन का आधार है। जीवन में आनेवाली कठिनाईयों को दूर करने में नैतिक मूल्य हमारी सहायता करते हैं। अच्छाईयों को अपनाने का और बुराईयों को दूर करने का रास्ता नैतिक मूल्यों के माध्यम से प्राप्त होता है।

2. अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य शिक्षा में नैतिक मूल्यों की अनिवार्यता पर बल देता है। ताकि व्यक्ति आत्मिक बल को पुनः प्राप्त करके विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास के साथ–साथ उनका चरित्र–निर्माण भी किया जा सके। विकसित भारत हेतु शिक्षा किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकती है, यही विचारणीय है।

3. विकसित भारत हेतु नैतिक मूल्यों की शिक्षा का योगदान :–

नैतिक मूल्यों का संस्कृति से निकटतम संबंध है। संस्कृति नैतिक मूल्यों का दर्पण है। विभिन्न संस्कृतियाँ एक ही समय में अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग रूपों में विकसित होती है। इसका प्रादुर्भाव विद्यार्थियों के आचार–विचार एवं व्यवहार पर प्रभाव डालता है।

जिस प्रकार बालक अपने परिवार और समाज में नैतिकता ग्रहण करता है, उसी प्रकार विद्यालय में शिक्षा के माध्यम से उसके व्यवहार में नैतिक मूल्यों का समावेश किया जाता है।

विद्यार्थी जीवन में नैतिक मूल्य व्यवहार में निहित होते है। व्यक्ति विचारों, आदर्शों तथा संस्थाओं के प्रति प्रगाढ़ता रखता है, चाहे वह प्राचीन ही क्यों न हो, प्राचीन भारतीय विद्वान मानते थे कि समुचित नैतिक भावना और चरित्र निर्माण के अभाव में बौद्धिक उपलब्धियों का कोई महत्व नहीं है। उनकी दृष्टि से सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज थी 'सदाचार'। सदाचार की शिक्षा के द्वारा ही छात्रों में नैतिक मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान या अंतदृष्टि प्राप्त करता है। तथा दृष्टिकोण और कौशल विकसित करता है। शिक्षा आंतरिक विकास और सर्वांगीण विकास की कभी न खत्म होनी वाली प्रक्रिया है, अर्थात् यह जन्म से मृत्यु तक चलने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है अर्थात् मनुष्य की शिक्षा स्कूल से शुरू नहीं होती, यह जन्म से शुरू होती है, यह तब समाप्त होती है जब वह इस संसार से विदा होता है।

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य अपनी सोच और तर्क, समस्या, समाधान, रचनात्मकता, बुद्धि, योग्यता, सकारात्मक भावनाओं और कौशल अच्छे मूल्यों और दृष्टिकोण को विकसित करता है। मनुष्य हर दिन और हर गतिविधि में कुछ न कुछ सीखता है। अतः शिक्षा एक सतत् और गतिशील प्रक्रिया है। नैतिक मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों के लिए बुनियादी आवश्यकता है, नैतिक मूल्यों की शिक्षा का उद्देश्य बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। नैतिक शिक्षा केवल बुनियादी कौशल सीखने तक ही सीमित नहीं है, नैतिक मूल्यों की शिक्षा औपचारिक शिक्षा स्कूल या कॉलेज में प्राप्त की जा सकती है, यह अनौपचारिक दिन–प्रतिदिन के अनुभवों से या संचार माध्यमों जैसे पुस्तकों, पत्रिकाओं, चलचित्रों रेडियों यो टेलीविजन के माध्यम से दी जा सकती है।

4. चारित्रिक गुणों के विकास पर बल :–

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऐसी मूल्यनिर्धारित शिक्षा की आवश्यकता है जो बच्चों में चारित्रिक गुणों का विकास कर सकें। इन गुणों के विकास के लिए शिक्षा प्रक्रिया में कतिपय परिवर्तन की आवश्यकता है। आज शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का ह्रास एवं उदासीनता और इससे जुड़ी अनेक समस्याएँ है जैसे– अनुशासनहीनता, बेईमानी, असत्यवादिता, आक्रोश, हिंसात्मक व्यवहार इत्यादि। इस समस्या का समाधान किये बिना विकसित भारत की कल्पना निरर्थक है। किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए उसके कारणों का पता लगाना आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आज की शिक्षा व्यवसायिक एवं भौतिक संसाधनों की पूर्ति का माध्यम बनकर रह गई है। जिससे नैतिक मूल्यों का लोप होता जा रहा है। यदि हमें उपरोक्त समस्याओं का निदान करना है तो शिक्षा में नैतिकता का समावेश अनिवार्य रूप से करना होगा।

ऐसा कहा गया है कि

''यदि धन गया, तो कुछ नहीं गया।
यदि स्वास्थ्य गया, तो कुछ चला गया।
यदि चरित्र गया, तो सब कुछ चला गया।''

अतः चरित्र वह धन है जिसे सदैव बचाकर रखना चाहिये। चरित्र ही भाग्य का निर्माता होता है। यह हमारे उत्थान एवं पतन का मुख्य कारण बन जाता है। चरित्र निर्माण के लिए बालक को जन्म से ही उसके माता–पिता उसे नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करते हैं। तभी वह समाज का एक उत्तम तथा श्रेष्ठ नागरिक बन अपना तथा समाज का उत्थान कर सकता है। देश में जितनी भी शिक्षा नीतियाँ बनी हैं सभी में बच्चों के नैतिक मूल्यों एवं नैतिक उत्थान की बात कही गयी है।

राधाकृष्णन आयोग (1948–49) ने नैतिक मूल्यों एवं नागरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना है। इस आयोग के अनुसार विद्यालय स्तर पर छात्रों का नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों को व्यक्त करने वाली कहानियाँ पढ़ाई जाये। छात्रों को महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़ाई जाये तथा इन जीवनी में महान व्यक्तियों के उच्चविचारों और श्रेष्ठ भावनाओं का समावेश किया जाये।

श्री प्रकाश समिति (1959) ने नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव दिया। विद्यार्थियों को प्राथमिक कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक उपयुक्त नैतिक शिक्षा दी जाये, माध्यमिक स्तर पर छात्रों को संसार के महान धर्मों के सिद्धांतों की शिक्षा दी जाये, पाठ्यक्रम सहभागी क्रियाओं के रूप में समाज सेवा की भावना को जागृत किया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने नागरिक बोध एवं नैतिक मूल्य संबंधी शिक्षा को आवश्यक बताते हुए लिखा है कि विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को व्यक्ति के सम्मान, समानता, सामाजिक न्याय, कल्याणकारी राज्य आदि की शिक्षा दी जाये। डिग्री कोर्स के प्रथम वर्ष में महान धार्मिक नेताओं की जीवन पढ़ाई जाये। द्वितीय वर्ष में संसार के धार्मिक ग्रंथों में सार्वभौमिक महत्व को चुने हुए भागों की शिक्षा प्रदान की जाए। तृतीय वर्ष में धर्म दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन कराया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि ''शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों को हर इंसान की सोंच और जिन्दगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जायेगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में यह बातें शामिल है। समान सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री–पुरूष के बीच समानता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत है।''

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे महानुभूति, दूसरे के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय तथा भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहने की बातें कही गयी है। किन्तु चिंता की स्थिति यह है कि आज शिक्षा व्यक्ति में स्वयं अपना ही मूल्य उत्पन्न नहीं कर पाती है और ना ही विद्यार्थियों में किसी प्रकार का नागरिक बोध जगा पाती है। यह विद्यालयों, शैक्षिक संस्थानों, शिक्षा से जुड़े सभी हितधारकों और विशेषकर अध्यापकों का उत्तरदायित्व है कि वे शिक्षण प्रक्रिया को इस भांति संचालित करें कि छात्र सही अर्थों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्राप्त कर सके।

विकसित भारत के निर्माण हेतु नैतिक मूल्यों की शिक्षा से निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है –

- विद्यार्थियों का चहुमुखी विकास करना।
- सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र का विकास करना।
- नैतिक चरित्रवान विद्यार्थी तैयार करना।
- समाज के लिए आदर्श नागरिक तैयार करना।
- देश और समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करना।
- विद्यार्थियों एवं नागरिकों में स्वस्थ आदतों का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों का समाज में समायोजन बैठाना।
- मौलिक प्रक्रियाओं और पाठन–लेखन, गणित, मौखिक, लिखित अभिव्यक्ति की नींव मजबूत करना।
- बसुदैव कुटुम्बकम की भावना का विकास करना।
- सभ्य समाज का निर्माण करना।
- अपनी संस्कृति तथा अपने मूल्यों की रक्षा करना।
- विश्वबंधुत्व की भावना को बढ़ाना।

5. निष्कर्ष :–

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को शामिल करके शिक्षा को मूल्योन्मुख बनाकर ही हम विकसित भारत का स्वप्न साकार कर सकते हैं। लेकिन केवल विद्यालय अथवा पाठ्य–पुस्तकें ही नैतिकता के विकास के लिए पर्याप्त नहीं है अपितु अभिभावक, समाज, मित्र, शिक्षकगण एवं शिक्षा से जुड़े सभी हितधारक इसके लिए उत्तरदायी है। इन सबका सम्मिलित प्रयास ही विद्यार्थियों के एवं नागरिकों के सम्पूर्ण नैतिक मूल्य एवं चारित्रिक विकास में सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

आज सम्पूर्ण विश्व को प्रेम, विश्वास, सत्य, अहिंसा और त्याग जैसे गुणों की आवश्यकता है जिसकी प्राप्ति नैतिक मूल्यों के विकास से ही संभव हो पायेगा तथा विकसित भारत की जो कल्पना है वह साकार हो पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

[1] जोशी (2005) नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

[2] अत्री (2005) भारत में शिक्षा का विकास, सुमित पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

[3] भटनागर, सिंह, वशिष्ठ (2005) शैक्षिक प्रबंध और शिक्षा की समस्याएँ, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।

[4] लाल एवं शर्मा (.....), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ।

[5] पी० डी० पाठक (.....), शिक्षा मनोविज्ञानप, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[6] भार्गव, उर्मिता एवं भार्गव उषा (2006), शिक्षा सिद्धांत व शिक्षण कला, राखी प्रकाशन, आगरा।

[7] नयी शिक्षा नीति 2020

[8] एस० एस० माथुर (2008), एडुकेशन साइकोलॉजी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[9] पाठक पी० डी० (2007), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

[10] श्रीवास्तव, डी० एन० वर्मा पीति (2014), बाल मनोविज्ञान बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।